International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 8 Aug. 2022, pp: 74-75 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

भारतीय इतिहास में प्राचीन और नवीन युग का समन्वय ।

भावना कुमारी
पीएचडी इतिहास विभाग
विश्वविद्यालय बी एन एम यू मधेपुरा

Submitted: 01-08-2022 Revised: 02-08-2022 Accepted: 08-08-2022

सार

वस्तु विशेष पर प्रकाश डालने के पूर्व मैं प्राचीनता प्राचीनकाल के शुरुआतके विषय में व्यक्त करना चाहूँगी तदनुरूप प्रांत वर्तमान वर्णन के बाद दोनों का कंट्रास्ट उपसंहार उपस्थित होगा।

आज जब भी बाहर निकलती हूँ सर्वसाधारण के मुखसे यह स्पष्ट होता है कि पहले के ज़माने में ज्यादा सुखी थे। ये सारी बातें सर्वसाधारण से सुनने को मिलती है। यद्यपि सभी पौराणिक चीजों में विज्ञान ने अपना प्रभाव दिखाया है हर चीज में परिवर्तन ही परिवर्तन है। चूंकि प्रकृति का परिवर्तन सृष्टि का शास्वत नियम है। हर चीज उससे बंधी है सारा संसार बंधा है परिवर्तन से। इसलिएजिसपे हम लोगों ने कदम रखा है भारत वर्ष में संक्रमण काल बीत रहा है प्राचीनता एवं नवीनता का सच्चे व्यक्ती जिवित है। उन्होंने प्राचीन युग देख रखा है अभी भौतिक युग या वर्तमान युग से अनभिज्ञ है या फिर वर्तमान में जो जन्म लिया है वह पौराणिक ता से अनभिज्ञ है। ऐसी परिस्थिति में संक्रमण की स्थिति है और संक्रमण स्थिति में मतांतर स्वभाविक है फिर भी दोनों के कंट्रास्ट करने के पहले कुछ सुविधा जो प्राचीन काल में थी, वो वर्तमान काल में नहीं है और जो सुख सुविधा वर्तमान में है वो प्राचीन काल में नहीं थी। सम्यक दृष्टीकोण से जब जीवन पद्धति चलेगी स्वयं जीने का ढंग चलेगा, तो दोनों का प्रभाव देखने को मिलेगा। ऐसे कहा गया है कि मनुष्य परिस्थिति का दास होता है। परिस्थिति के अनुसार सद्भाव बनाना चाहिए, वेश भूसा बनाना चाहिए। प्रभावित होने के वज़ह उसको अंगीकार करना चाहिए। प्रभावित होने से प्रगति रुक जाएगी, प्रगति रुक जाएगी तो जीवन का अस्तित्व खतरे में पर जाएगा इसलिए प्राचीन काल में जो चीज़ ग्राह्य था ग्राह्य अभी भी हैं उसको निश्चित रूप से ग्रहण करना चाहिए। आधुनिक काल में जो छोड़ने योग्य चीज़ है उसे त्याग किया जाना चाहिए।

उद्देश्य:

- प्राचीन और नवीन युग के लोगों के जीवन शैली में क्या समानता है।
- प्राचीन और नवीन युग के लोगों की शिक्षा में क्या समानता है।
- प्राचीन और नवीन युग लोगों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक शैक्षिक दृष्टीकोण में क्या समानता है।

मुख्य बिंदु:

शिक्षा, सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक, लैंगिक भेदभाव।

परिचय:

प्राचीन भारतके इतिहास में वैदिक सभ्यता सबसे प्रारंभिक सभ्यता है जिसका संबंध आर्यों के आगमन से है। इसका नामकरण आर्यों के प्रारंभिक साहित्य वेदों के नाम पर किया गया है। आर्यों की भाषा संस्कृत थी एवं धर्म वैदिक धर्म या सनातन धर्म के नाम से प्रसिद्ध था।

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 8 Aug. 2022, pp: 74-75 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

बादमें विदेशी आक्रान्त द्वारा इसधर्म का नाम हिन्दू पर।।प्राचीन भारत की इतिहास में कई प्रकार के सभ्यता का समावेश था, जिस में प्रागैतिहासिक काल, ताम्रपत्र युग, सिंधु घाटी सभ्यता वैदिक सभ्यता, जैन धर्म मौर्य साम्राज्य प्रमुख थे।

आधुनिक भारतीय इतिहास को सन 1850 केबाद का इतिहास माना गया है। आधुनिक भारतीय इतिहास के एक बड़े हिस्से पर ब्रिटिश शासन का कब्जा था। यह आधुनिक भारतीय इतिहास को मुगलों के भारत में आगमन से पहले से लेकर पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के शासन काल तक माना गया है।

लैंगिक भेदभाव प्राचीन काल में:

प्राचीन कालमें अध्यात्म भावनाओं का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान था। प्राचीन भारत की संस्कृति हर क्षेत्र को अलग-अलग संस्कृति में विभाजित की हुई थी। प्राचीन भारत अलग-अलग धर्म होने के कारण भी कोई भेदभाव नहीं था। नारी को पुरुष के समान माना जाता था। कई साक्ष्यों के अनुसार महिलाओं की सामाजिक स्थिति ऊंची थी।

वैदिक काल के समय स्त्रियां योद्धा, वीरांगना, साहसी, पूजनीय हुआ करती थी, जबकि आधुनिक भारत में स्त्रियों की स्थिति प्राचीन भारत से निम्न है। प्राचीन काल में स्त्रियों को देवी देवी मानकर पूजा जाता था, जबकि वर्तमान भारत में कन्या जन्म पर शोक मनाया जाता है। प्राचीन काल में हर स्त्री को जीवन-साथी चुनाव करने अधिकार प्राप्त था, जबकि आधुनिक भारत में जीवन-साथी चुनाव करने पर स्त्री काहॉरर किलिंग की और सामाजिक वहिष्कार किया जाता है स्त्रियों को अपनी जीवन शैली अपने तरीके से जीने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। प्राचीन भारत में महिलाओं को सम्पत्ति पर उतना ही अधिकार प्राप्त था, जितना कि पुरुषों को जिसमें महिलाओं को अपना भविष्य निर्माण करने तथा,शिक्षिका के रूप में काम करने का अधिकार प्राप्त था जिसका उदाहरण: कई सारी विदुषी नारियां हैं जिसमें लोपामुद्रा, घोष,सिक्ता आदि प्रमुख रहीं हैं। अगर हम आधुनिक भारत में महिलाओं के सशक्त होने का वर्णन करें तो आज की नारी पुरुष से किसी को क्षेत्र में पीछे नहीं चाहे वो राजनीति हो या सामाजिक या व्यवसायिक या वैज्ञानिक एवं कला के हों नारी हर क्षेत्र में अपना एक अलग पहचान बना रही है। हमारे देश की ऐसी कई महान नारियां हैं जिन्होंने आसमान की बुलंदियों को छुआ है और देश का नाम रोशन किया है उनमें से कल्पना चावला,सुनीता विलियम्स, पीवी सिंधु, अवनी चतुर्वेदी प्रमुख हैं।

निष्कर्ष:

उपरोक्त सभी तथ्यों से स्पष्ट होता है किदोनों ही युग में काफी समानताएं हैं जीवन जीने की कला हो, विज्ञान हो या राजनीति का क्षेत्र हो या शिक्षा का क्षेत्र प्राचीन और नवीन युग में काफी समानताएं देखने को मिलती है।

सन्दर्भ सूची:

- जैन, हुकुम चंद और माली,नारायण,(2011), "राजस्थान का इतिहास और संस्कृति:विश्वकोश"जयपुर:जैन प्रकाशन मंदिर।
- अंसारी, एएम 2 ,(2010),"महिला और मानव अधिकार" जयपुर: ज्योति प्रकाशन।
- पुरी, पी ए एन, एन बी पी, दास, एएम एन, (2005),"भारत का सामाजिक संस्कृतिक और अर्थिक इतिहास"दिल्ली: मेक मिलन इंडिया लिमिटेड।
- शर्मा, गोपीनाथ (2008), "राजस्थान का संस्कृतिक इतिहास "जयपुर:राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
- शर्मा,कालू राम, (2004),"उन्नीसवीं सदी के राजस्थान का सामाजिक और अर्थिक जीवन "जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।